By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

भारतीय अर्थव्यवस्था पर उदारीकरण के प्रभाव

(The effects of liberalization on Indian economy.)

भारत सरकार द्वारा अपनायी गई उदारीकरण की नीति का भारतीय अर्थव्यवस्था समायोजन कार्यक्रमों पर गहरा प्रभाव पड़ा है, जिसकी संक्षिप्त विवेचना निम्न प्रकार है:-

1. विश्व व्यापार में भारत का योगदान:(Contribution of India in Global Trade) भारतीय सरकार द्वारा उदारीकरण की नीति को अपनाकर विश्व व्यापार में अपना अंशदान सुनिश्चित करना है। यद्यपि विश्व व्यापार में भारत का योगदान अपने आकार के हिसाब से अत्यन्त न्यून है परन्तु भारत सरकार का प्रयास है कि उदारीकरण की नीति के प्रयोग से विश्व व्यापार में भारत का योगदान बढ़ेगा। वर्ष 2007 तक विश्व व्यापार में भारत का योगदान एक प्रतिशत तक ले जाना था। वैसे तो भारत की स्वतंत्रता के समय विश्व व्यापार में भारत का योगदान 2.5 प्रतिशत था जो वर्ष 1990 तक घटकर 0.45 प्रतिशत मात्र रह गया था। उदारीकरण की नीति अपनाने पर विश्व व्यापार में भारत का योगदान वर्ष 2006-07 में 1.5 प्रतिशत तक पहुँच गया। यदि हम 12 प्रतिशत तक वृद्धि दर कायम रख पाते हैं तब वर्तमान में 2 प्रतिशत तक के लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है। अभी तक भारत का निर्यात निर्माणी वस्तु तक ही सीमित रहा है परन्तु अब सेवा क्षेत्र व कृषि क्षेत्र में निर्यातों को प्रोत्साहन देकर उक्त लक्ष्य को प्राप्त करने के सक्रिय प्रयास किये जा रहे हैं। पहली बार निर्यात प्रोत्साहन हेतु सेवा क्षेत्र के योगदान को ठीक-ठाक नहीं बताया जा सकता- परन्तु फिर भी पर्यटन व स्वास्थ्य रक्षा

कार्यक्रमों सेवा क्षेत्र का योगदान निरन्तर बढ़ रहा है। विश्व व्यापार संगठन (WTO) द्वारा विकसित देशों द्वारा कृषि उत्पाद के निर्यात पर दी जा रही सहायता को कम करने के प्रयासों के कारण भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिये कृषि उत्पाद के निर्यात की संभावना बढ़ रही है। अब भारतीय कृषक भी उदारीकरण की नीति का लाभ कृषि उत्पादों के निर्यात द्वारा उठा सकते हैं।

2. औद्योगिक क्षेत्र का द्रुत विकास:- (Fast Expansion in Industrial Area):- उदारीकरण ने औद्योगिक क्षेत्र में निजी पूँजी को प्रोत्साहित किया है जिसमें न केवल भारतीय नीजी पूँजी को बढ़ावा दिया गया है वरन विदेशी पूँजी निवेश व्यवस्था को भी उदार बनाया गया है। अब सार्वजनिक क्षेत्र के लिए 6 उद्योग सुरक्षित हैं। शेष समस्त औद्योगिक क्षेत्र नीजी क्षेत्र के लिए खोल दिये गये हैं। औद्योगिक वृद्धि दर पर रोक लगाने वाले एकाधिकार व प्रतिबन्धात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम के प्रतिबन्धों को भी काफी कम कर दिया गया है। 35 प्राथमिकता प्राप्त उद्योगों में विदेशी तकनीक के आयात की स्वीकृति प्रदान की गई है तथा 51% तक विदेशी पूँजी का निवेश प्रतिबंधित कर दिया गया है।